बिस्मिल्लाहिर्रह्मानिर्रहीम - अल्लहुम्मा सल्लि अला मुहम्मदिंव्व अला आलि मुहम्मद्दिन

हज़्रत महेदी अलेहिस्स्लाम की आमद हिन्द, अजम में(अहदीस)

1: हज़्रत सुबान रज़ी अल्लाहु अन्हु रिवायत कर्ते हें के रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलेहि व आलिहि व सल्लम ने फ़र्माया- तुम्हरे खज़ाने *(खिलाफ़त)* के लिये तीन शख्स जन्म करेंगे। ये तीनों खलीफ़े के लड़के होंगे। फ़िर भि ये खज़ाना उन में से किसि की तरफ़ मून्तखल नहीं होगा। इस के बाद मश्रिक़ की जानिब से सियांह झन्डे नमुदार होंगे ओर वो तुम को एसा क़तल करेंगे{*} के अब तक किसि ने ऐसा क़तल ना किया होगा। *(रावी हदीस यानी हज़्रत सुबान रज़ी अल्लाहु अन्हु कह्ते हें)* के फ़िर रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलेहि व आलिहि व सल्लम ने कोई बात फ़र्मायी। फ़िर फ़र्माया के जब तुम लोग उन्हें देख्ना तो उन से बेत कर्लेना अगर उस बेत के लिये बरफ़ पर से रेग्ते जाना पड़े, बिलाशुबा वो अल्लाह पाक के खलीफ़े महेदी हें। *(इब्ने माजह, अहमद बिन हन्बल, हाकिम, देलमि, रुयनी, नईम बिन हम्माद)*

{*}बघ्दाद 656 हिज्री: चालीस दिन तक लश्करे हलाकु क़तल ओर ग़ारत में मषग़ूल रहा 16 लाख जानें तलफ हुऐं वह्शी मोगंलों ने शीर ख़वार बच्चों को तक ना *छोडा* गलियोन मे खून की नालियाँ बह रहीं थीं दर्या-ए-दजला का पानि मीलों आग्रवानी(लाल) हो गया। *(माकुज़ अज़ तारीख वसाफ़)*

*{मुल्क अरब का हदूद अर्बा'आ (सिमाएँ):- [मग्रिब- बहीरह क़ुल्ज़म(लाल सागर), आफ़्रिका बर्रे आज़म] [जुनूबः- बहीरह अरब, बहरे हिन्द] [शुमालः- एशिअ-ए-कोचक,रूस सूबा] [मश्रिकः- (**1**) जुनूब :-मश्रिक सह्रा-ए-अरब साहिल, इरान, बुलोचिस्तान, (**2**) शुमाल मश्रिकः- खुरासानि पहाडियाँ हें जहाँ छे छे माह तक बरफ़ जमी रहती है और इसी इलाख़े के मश्रिक(पूरब) में हिनदुसतान वाक़े हे]}*

2:हज़्रत जुज़-अल ज़ुबेदी रज़ी अल्लाहु अन्हु रिवायत करते हें के रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलेहि व आलिहि व सल्लम ने फ़र्माया:*मश्रिक {हिन्दुस्तान}* से लोग ज़ाहिर होंगे जो महेदी की इता'अत करेंगे- *(इब्न माजह)*

3:सुबान रज़ी अल्लाहु अन्हु जो रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलेहि व आलिहि व सल्लम के आज़ाद ग़ुलाम थे रिवायत कर्ते हें - फ़र्माया रसूलुल्लाह सल्लेल्लाहु अलेहि व आलिहि व सल्लम ने मेरी उम्मत में दो ग्रोह हें जिन्हें अल्लाह पाक दोज़ख की आग से बचादीया एक ग्रोह हिन्दुस्तान में लडेगा दूस्रा ईसा(अ.स) के साथ होगा। *(नसाई)*

4:अबू हुरेरह रज़ी अल्लहु अन्हु से रिवायत हे के आप ने फ़र्माया रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलेहि व अलिहि व सल्लम ने ग़ज़्वह हिन्द का हम से वादा फ़र्माया अगर इस ग़ज़्वह को मे पाऊं तो मेरी जान ओर मेरा माल इस में कुर्बान कर्दूं ओर अगर मे इस में क़तल किया जाऊं तो मेरा शुमार शोह्दा में होगा ओर अगर वापस आऊं तो मे वो अबू हुरेरह हूँ जो दोज़ख कि आग से आज़ाद कर्दिया गया हे। *(नसाई)*

5:इब्ने उमर रज़ी अल्लाहु अन्हु केह्ते हें के रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलेहि व आलिहि व सल्लम ने फ़र्माया महेदी ऐसे गाँव से निक्लेंगे जिस्को "कर'आ" कहा जाता हे - *{जोन्पूर का क़दीम नाम - किताब भारत का पाचीन ईतिहास} (अल उर्फ़ुल वर्दी फ़ी अख्बारिल-महेदी,-जलालुद्दीन सुयुती, अबू नईम, अबू बकर् बिन अल मुक्री, मो'जम, इब्ने अदि अल कामिल, अल्कुनजी अल्बयान, डाक्टर मुहम्मद ताहिरूलखाद्री "आमद सय्यद्ना इमाम महेदी अलेहिस्स्लाम")*

6:अफ़्सोस हे तालिक़न पर *(एक इलाक़ा हे अफ़्गानिस्तान में)* के इस मुक़ाम पर अल्लाह पाक के खज़ाने हें मगर ये सोने ओर चान्दि के नहीं बल्के ऐसे अश्खास के हें जिन्होंने अल्लाह सुभानहु ता'ला को इस तरह पह्चाना जेसा के हक़ हे। वो लोग महेदी आखिरुज़्ज़माँ के अस्हाब हें। *(अल बुर्हान फ़ी अलामत महेदी आखिरुज़्जमाँ- शेख अली मुत्तक़ी हिन्दि)*

7:अबू हुरेरह रज़ी अल्लाहु अन्हु ने बयान किया के हम रसूलुल्लाह सल्लेल्लाहु अलेहि व आलिहि व सल्लम के पास बेठे हुए थे के "सूरतुल जुम'अह" की ये आयतें नाज़िल हुईं "ओर दूस्रों के लिय भी जो अभी इन में शामिल नहीं हुए हें"(*सुरह*62 आयत3) *(आंहज़्रत सल्लेल्लाहु अलेहि व सल्लम हादी ओर मु'अल्लिम हें)* बयान किया में ने अर्ज़ की रसूलुल्लाह! ये दूस्रे कोन लोग हें? आंहज़्रत सल्लल्लाहु अलेहि व आलिहि व सल्लम ने कोइ जवाब नहीं दिया। आख़िर येही सवाल तीन मर्तबा किया। मज्लिस में सल्मान फ़ार्सि रज़ी अल्लाहु अन्हु भी मोजूद थे आंहज़्रत सल्लेल्लाहु अलेहि व आलिहि व सल्लम ने उन पर हाथ रख कर फ़र्माया अगर ईमान सुरय्या पर भी होगा तब भी इन लोगों *{अजमियों}* में से उस तक पहुंच जायेंगे या यूँ फ़र्माया के एक आद्मी इन लोगों में से उस तक पहुंन्च जायेगा।*(बुक़ारी)*

8:हज़्रत अबु हुरेरह रज़ी अल्लाहु अन्हु से रिवायत हे के एक रोज़ नबी अक्रम सल्लल्लाहु अलेहि व आलिहि व सल्लम ने ये आयत तिलावत फ़र्मायी "अगर तुम मूँ फेरोगे तो वो तुम्हारी जगा ओर लोगों को ले आयेगा ओर वह तुम्हारी तरह के नहीं होंगे"(*सुरह*47 आयत38) सहाबा किराम ने अर्ज़ किया या रसूलुल्लाह! हमारे बद्ले में कोन लोग आयेंगे? नबी करीम सल्लल्लाहु अलेहि व आलिहि व सल्लम ने सल्मान फ़ार्सी रज़ी अल्लाहु अन्हु के कन्धे पर हाथ रख कर फ़र्माया "ये ओर इस की क़ौम *{अ'ज्मी}* " "ये ओर इस की क़ौम*{अ'ज्मी}*"*(दो बार फ़र्माया)।(तिर्मिज़ी, मिश्काथ)*

9:हज़्रत अबू हुरेरह रज़ि अल्लाहु अन्हु से रिवायत हे फ़र्माते हें मे ने नबी करीम सल्लेल्लाहु अलेहि व आलिहि व सल्लम की खिद्मत मे अजमियों का ज़िकर किया तो आप सल्लल्लाहु अलेहि व आलिहि व सल्लम ने फ़र्माया मुझे इन सब पर या इन मे बा'ज़ पर तुम सब या तुम मे से बा'ज़ की बनिस्बत ज़्यादाह ए'तमाद हे। *(तिर्मिज़ी, मिश्काथ)*

10:हज़्रत उम्मे सल्मा रज़ी अल्लाहु अन्हा रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलेहि व आलिहि व सल्लम का फ़र्मान नक़ल कर्ती हें:...एक शख्स(महेदी) मदीना {शहर ना के मदीनतुन्बी या मदीनतुर्रसूल}{"कर'अ"गाँव 800 हिज्री जोन्पूर शहर बना} से मक्का जायेंगे...। *(अबू दावुद, अह्मद बिन हन्बल, अल हाकिम, इबन-ए-अबि शोबा)*

मदीन कुरआन मे:"*ओर शेहर के पर्ले किनारे से एक आद्मी दोड़्ता हुआ आया, उस ने कहा:आए मेरी क़ौम! तुम पेगम्बरों की पैर्वि करो*"*(सुरह36* आयत*20)*

ये सारी अहादीस हज़्रत सय्यद मुहम्मद अज्मी हिन्दी जोन्पूरी महेदी मोऊद अलेहिस्सलाम पर सद फ़ी सद सादिक़ आती हें - आमन्ना व सद्क़्ना

रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलेहि व आलिहि व सल्लम ने फ़र्माया जिस ने महेदी का इन्कार किया यक़ीनन उस ने कुफ़्र किया।*(अल सलामि,-"उक़्दु दुरर", जलालुदीन सुयुती-"अल हावी अल फ़तावी", अबू बकर अस्काफ़ी-"फ़वाएद-ल-अख्बार", अबुल क़ासिम सुलेही-"शरह अल सीरह", अल हाफ़िज़-लिसान अल मिज़ान", शेख़ अब्दुल्लाह बिन सिद्दीक़ ख़मरी-"अल महेदी अल मुन्तज़र", शेख अल हाफ़िज़ ज़हबी-"फ़रएद सम्तीन', जलालुदीन सुयुती-"अल उर्फ़ुल वर्दी फ़ी अख्बारिल-महेदी", इब्न-ए-हजर अल हाएतमी-"अल क़ौल अल मुख्तसर", डाक्टर ताहेरुल क़ाद्री-"अल क़ौल अल मोतबर")*

याद्दाश्त : {फ़्लावर ब्रकेट} की तहरीर कुतबे अहादीस से नहीं हैं।